आई लव इंडिया

आँत्ये दाम्म

फ़िलडोलिन

उल्टा पुल्टा

कथा की 300एम थिंकबुक

सब चमगादड़ उल्टे लटकते हैं,
सिर्फ़ एक को छोड़कर।

वह है फ़िलडोलिन।

फ़्लिडोलिन दुनिया का सबसे खुश चमगादड़ बच्चा था, जब वह रहता उल्टा-पुल्टा।

उसके मम्मी-पापा को आशा थी कि फ़्लिडोलिन भी एक दिन बाकी चमगादड़ों जैसा बन जाएगा। लेकिन वह तो बढ़ता गया, बढ़ता गया, और जैसा था वैसा ही रहा। फिर भी, फ़्लिडोलिन था **खुश**।

कभी-कभी वह सोचता, मैं क्यों हूँ **उल्टा-पुल्टा**।

और वह लोगों से पूछता फिरता।

एम्मा ने कहाः “मुझे पता है तुम क्यों हो उल्टे–पुल्टे - इसलिए ताकि तुम आसानी से गेंद ढूँढ सको जब विली उसे आसमान–मैदान में खो दे।”

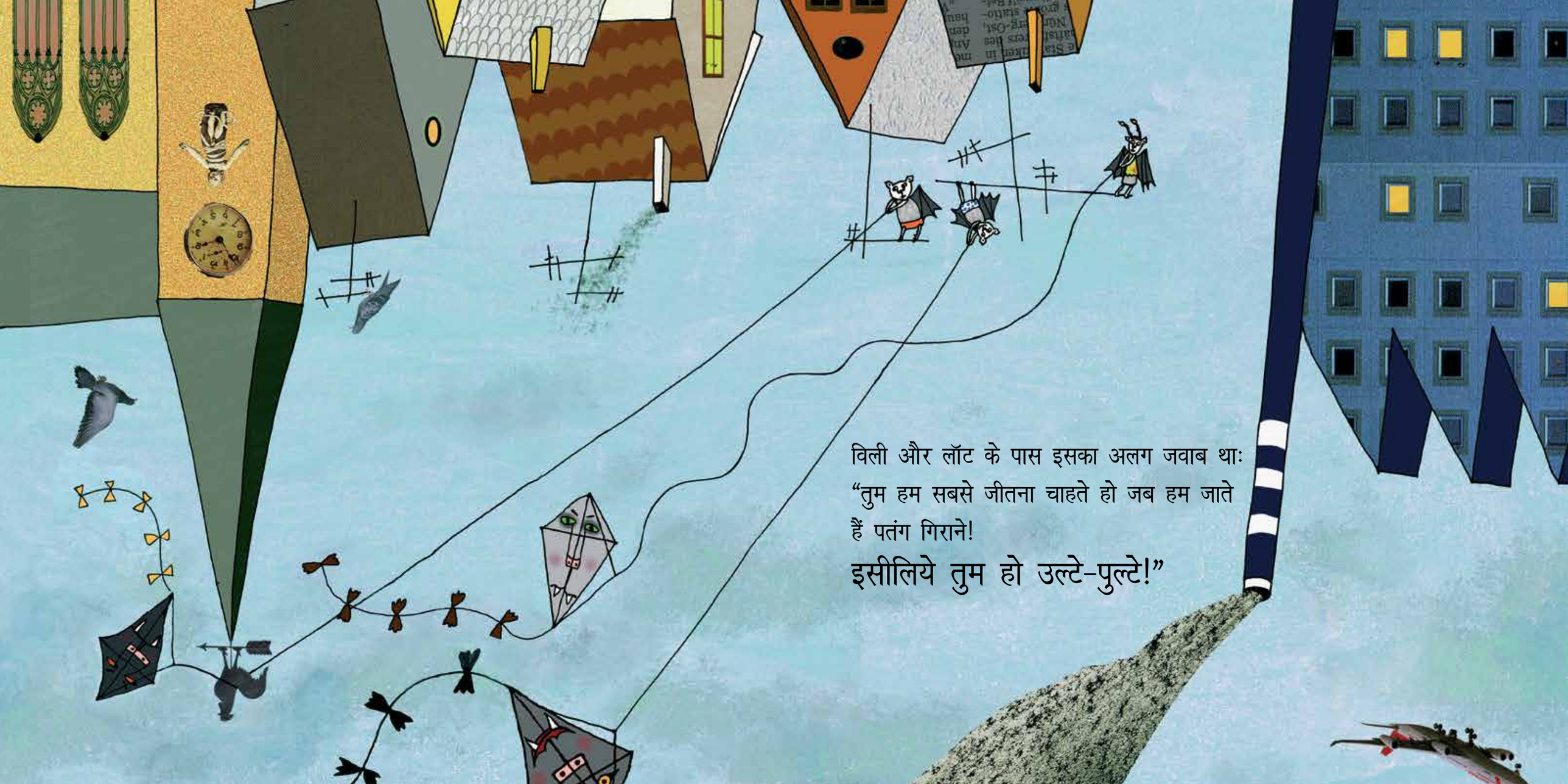

विली और लॉट के पास इसका अलग जवाब था:
“तुम हम सबसे जीतना चाहते हो जब हम जाते हैं पतंग गिराने!
इसीलिये तुम हो उल्टे-पुल्टे!”

श्रीमती श्यामापक्षी को यह सब सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ।
उनके लिए तो फ़्लिडोलिन था **बिल्कुल ठीक।**
वही तो उनके बच्चों की देखभाल करता था जब श्रीमान-श्रीमती
श्यामापक्षी शाम को घूमने जाते।
“तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो!” उन्होंने फ़्लिडोलिन को शाबाशी दी।
“मेरे बच्चों की देखभाल तुम से बेहतर कोई नहीं कर सकता।”

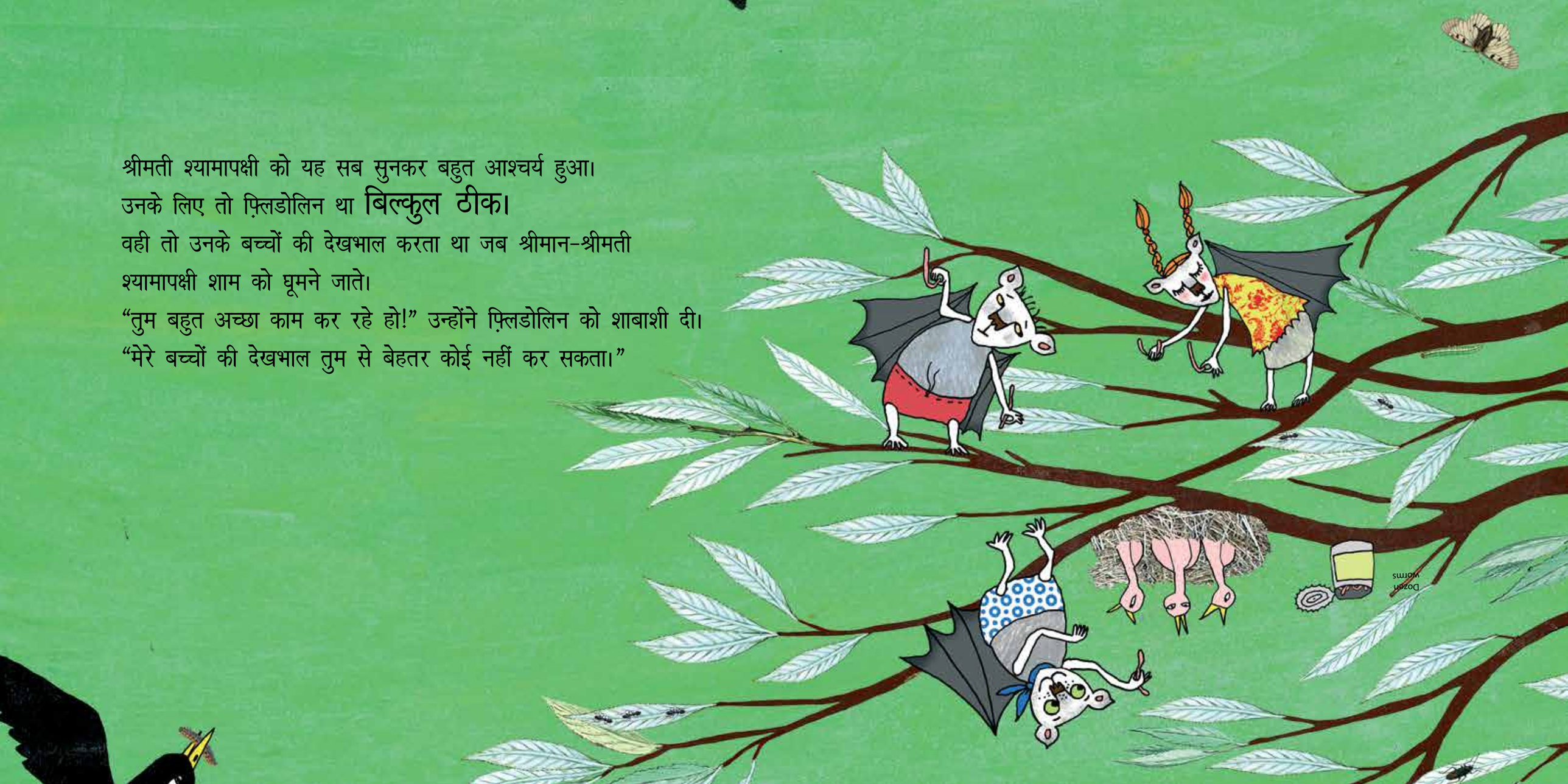

नानी को था यकीन कि एक दिन
फ़्लिडोलिन बनेगा मशहूर यो-यो खिलाड़ी।
“फ़्लिडोलिन, मेरे नन्हे,” नानी ने उदास
मन कहा, “सारी उम्र बीत गयी यो-यो
खेलते-खेलते, और देखो - मैं अब भी न
सीख पाई!”

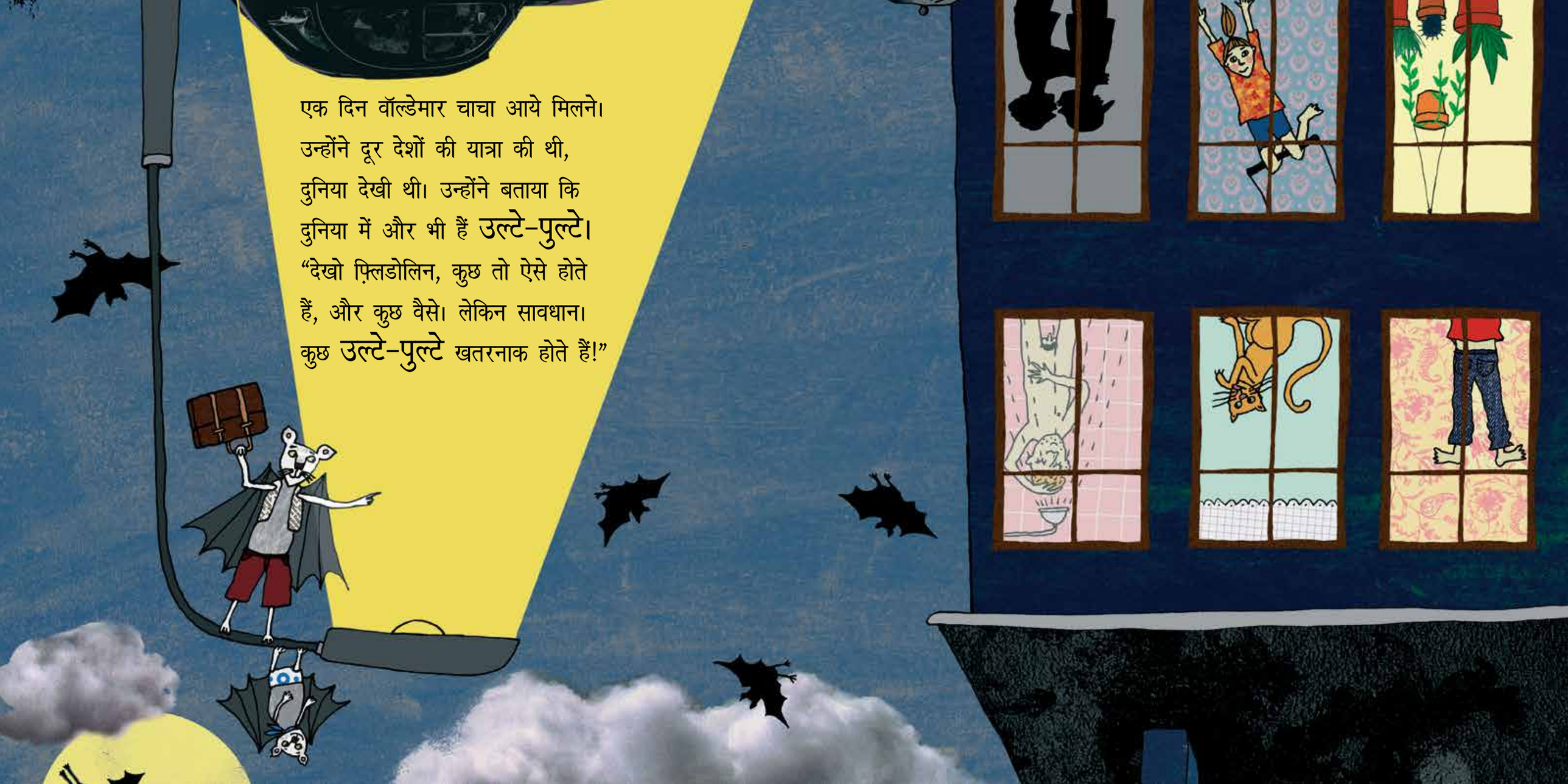

एक दिन वॉल्डेमार चाचा आये मिलने।
उन्होंने दूर देशों की यात्रा की थी,
दुनिया देखी थी। उन्होंने बताया कि
दुनिया में और भी हैं **उल्टे-पुल्टे**।
“देखो फ़्लिडोलिन, कुछ तो ऐसे होते
हैं, और कुछ वैसे। लेकिन सावधान।
कुछ **उल्टे-पुल्टे** खतरनाक होते हैं!”

जैसे, भूखी लोमड़ी खतरनाक थी। उसे चूहे खाना पसंद था, और चमगादड़ भी। वह तो इसी ताक में रहती कि कैसे उन्हें उस पेड़ से नीचे उतारे जहाँ वे सुबह आकर सोते थे। लेकिन वह पेड़ पर चढ़ती कैसे?

ये तो अच्छा हुआ कि लोमड़ी को वह गुफ़ा नहीं मिली जहाँ चमगादड़ दिन में सोते थे। क्योंकि फ़्लिडोलिन गुफ़ा के मुँह पर जो लेटा रहता था। उसे देख लोमड़ी ने सोचा, "ये तो कभी चमगादड़ नहीं हो सकता। वे तो हमेशा **उल्टे** लटकते हैं," और वह चली गयी।

चमगादड़ आपस में फुसफुसाए, "क्या तुम्हें पता है फ़्लिडोलिन क्यों है **उल्टा-पुल्टा?**" "हाँ, बेशक। हम पर नज़र रखने के लिए," विली ने कहा। "और हमें लोमड़ी से बचाने के लिए," लॉट नींद में बड़बड़ाई।

जब रात ढली, चमगादड़ उड़ निकले मक्खियों और पतंगों की तलाश में। अब उन्हें **ऊपर** और **नीचे** की कोई परवाह न थी। अब तो वे चाहते थे सिर्फ़ खाना।

और ढेर सारा खाना!

सुबह होने तक सब बहुत थक चुके थे। फ़्लिडोलिन भी। अब समय था सोने का। फ़्लिडोलिन की माँ ने उसे प्यार से चूमा और कहा, “तुम सचमुच **स्पेशल** हो, मेरे बच्चे।” वह खुश थी।

और फ़्लिडोलिन भी।

आंत्झया दाम का जन्म 1965 में वीसबाडेन में हुआ। उन्होनें डार्मश्टाड और फ़्लोरेंस से वास्तुकला की पढ़ाई की। वे गीसेन के पास एक छोटे से गाँव में अपने परिवार के साथ रहती हैं। उन्होंने अपनी दो बेटियों के जन्म के बाद से बच्चों के लिए किताबें लिखनी व उनमें चित्रकारी करना शुरू किया। गर्स्टेन्बर्ग द्वारा उनकी एक किताब 'व्हॉट इस दिस' प्रकाशित की जा चुकी है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

© 2006, गर्स्टनबर्ग वरलाग, हिलडैंशाइम, जर्मनी
प्रथम हिंदी संस्करण © कथा, 2009, 2021
फ़िलडोलिन वरकैहर्ट हेरुम का यह प्रथम हिन्दी संस्करण गर्स्टनबर्ग वरलाग, हिलडेशाइम, जर्मनी की सहमति से कथा द्वारा एक लाइसेन्स प्राप्त प्रकाशन है।
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़े।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह पुस्तकें कथा ने बहुत ध्यान और स्नेह के साथ बनायीं हैं। यह 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए हैं।

यह हमारे 'UntextBook Inititaive' का हिस्सा हैं। बच्चों को पढ़ने का आनंद आये उसके लिए हम बेहतरीन साहित्य और कला का इस्तेमाल करते हैं।

अपने बच्चों के बिना शब्दों वाली किताबों से 1200 शब्दों वाली कहानियों की यात्रा कराएँ।

इसमें 3500 वर्ष पुराने साहित्य से कहानियाँ और कविताएँ हैं।

अपने बच्चों के साथ इन्हें पढ़ें। उनकी कल्पना को नयी उड़ान दें।

हमारे साथ '300 Million Citizens' Challenge' का हिस्सा बनिए। एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए जहाँ बच्चे आनंद से पढ़ें और समझें।
हमसे जुड़ें: 300m@katha-org
स्वयंसेवा के लिए: volunteer@katha-org
पर हमें लिखें

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।
यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।
अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी ओरेंज श्रृंखला में

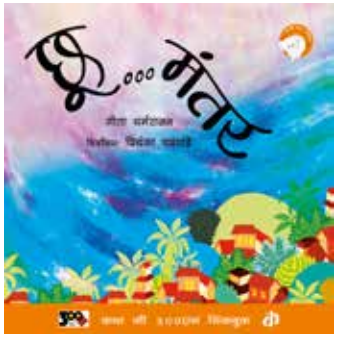

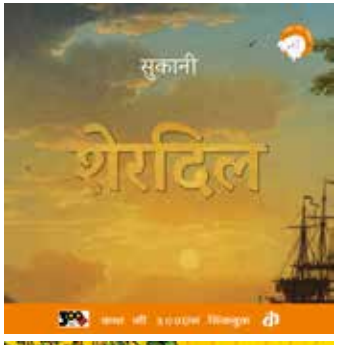

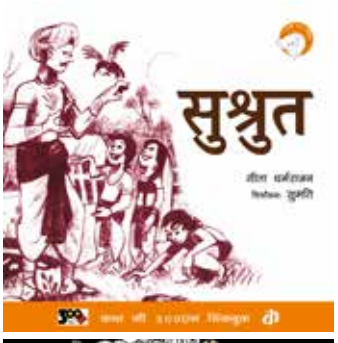

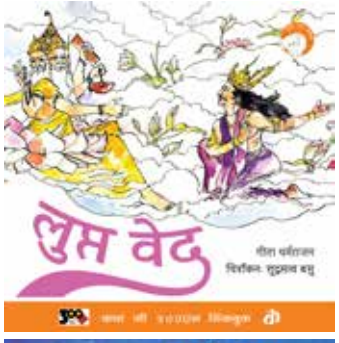

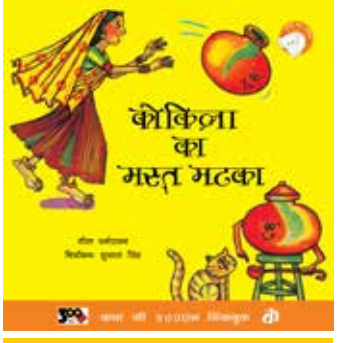

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx